15. हास्य एवं विनोद कला

यों तो ईश्वरीय ज्ञान रमणीक है। जिसे ज्ञान की गहराई में उतरना आता है, उसके **जैसी ख़ुशी और किसी को नहीं होती। जिसका जीवन योगयुक्त है, वो आनन्द-विभोर होता है और उसे स्थूल विनोद की ज़रूरत महसूस नहीं होती। जो दिव्यगुणों के मोती चुगता है और क्षीर ले लेता है तथा नीर को अलग कर देता है, उस सद्विवेकी व्यक्ति को स्थूल हास्य में कोई विशेष रस नहीं मिलता। जो सेवा में लगा रहता है, उसका मन सदा मुस्कराता रहता है। बाह्यमुखता पर आधारित हँसी-विनोद की आवश्यकता उसे होती है जिसे अभी रूहानी नशा नहीं चढ़ा।**

परन्तु जब तक मनुष्य के जीवन में ज्ञान पूरी तरह से रंग लाये और योग उसके जीवन में सुगन्धि भरे तथा गुणों में रमण करते-करते वो उसके रस में डूब जाये, तब तक उसे कभी-कभी रमणीकता की आवश्यकता महसूस होती है।

इस प्रयोजन से व्यक्ति यह महसूस करता है कि वो कोई गीत सुन ले, कोई नाटक देख ले, उसे हँसी की कोई बात सुना दी जाये जिससे कि वो ज्ञान की गम्भीरता से ऊपर आकर थोड़ा हल्कापन अनुभव करे। अतः यदि किसी व्यक्ति को ऐसी कला आती हो कि वो ज्ञानयुक्त हँसी की कोई बात सुना दे जिससे गम्भीर समस्या सामने होने पर भी सुनने वाला खिलखिला उठे। वो कोई ऐसी कविता सुना दे जिससे कि व्यक्ति के मन में एक नयी उमंग जाग जाये, गीत की कोई दो पंक्तियाँ ही ऐसी गा दे जिससे मनुष्य का मन झूम जाये और बात को ऐसे चुटकुले में बदल दे कि चिन्ता व्यक्ति के मन से छूट जाये और उसे ऐसे लगे कि वो यूँ व्यर्थ ही चिन्ता कर रहा है, तब इससे भी काफ़ी सेवा हो जाती है।

इसलिए जीवन में सदा ख़ुश रहने के लिए और दूसरों को ख़ुश रखने के लिए थोड़ी-बहुत हास्य और विनोद की कला का आना भी ज़रूरी है, इससे व्यक्ति एक-दूसरे के नज़दीक आते हैं। कटुता अथवा नाराज़गी को छोड़कर हँस पड़ते हैं। दुःख-दर्द को भूलकर एक नयी शक्ति का प्रवाह अपने जीवन में महसूस करते हैं और एक-दूसरे के साथ तालमेल बनाये रखना सहज महसूस करते हैं।

जिन व्यक्तियों के जीवन में केवल रूखापन हो, जो कभी भी अवसर आने पर हास्य या विनोद कला के किसी भी रंग-ढंग को प्रयोग करना न जानते हों, लोग उनसे उकता जाते हैं। वे उसके प्रति आकर्षित नहीं होते और मेलजोल को सहज नहीं मानते बल्कि दूर-दूर रहते हैं। इससे ऐसे व्यक्तियों को जन-सम्पर्क के कार्यों में सफलता प्राप्त नहीं होती। लोगों के मन को जीतने की उस कला में कमी रह जाती है। नीरस व्यक्ति की अपनी नीरसता के कारण वातावरण में नीरसता छा जाती है और लोग उसे अपनी महफ़िल में शामिल करने के लिए

हिचकिचाते हैं। वे यह चाहते हैं कि कभी तो वे जी खोलकर बोल सकें, अनौपचारिक रूप से मिल सकें और दोस्तान तरीके से बातचीत कर सकें। इसके लिए हँसी और विनोद वाले व्यक्ति को अपनी संगत में रखना चाहते हैं।

हँसी और विनोद का अभिप्राय यह नहीं है कि अभद्रता और उच्छृंखलता तथा चंचलता और चपलता से बोलचाल या व्यवहार किया जाये। इसका यह भी भाव नहीं है कि इतना खिलखिलाया जाये, ज़ोरदार कहकहे लगा कर हँसा जाये और मज़ाक का गोलगप्पा खाया जाये कि आत्मा और परमात्मा की सुध-बुध ही भूल जाये और लक्ष्य तथा पुरुषार्थ की विस्मृति हो जाये। रूहानियत के बिना तो हँसी और विनोद समय गँवाने वाले, बाह्यमुखता में लाने वाले, वातावरण को बिगाड़ने वाले तथा देहाभिमान में लाने वाले होते हैं। ज्ञानी और योगी ऐसे हँसी और विनोदप्रिय नहीं होते जो वह हँसी उसे प्रियतम प्रभु से दूर कर दे और योग की ऊँचाइयों से उतार कर धराशायी कर दे। बल्कि शिष्टता, सज्जनता, मर्यादा से युक्त होकर अच्छे प्रकार के हँसी और विनोद के तरीके— गीत, कविता, नाटक, कहानी आदि ही ठीक प्रकार के ऐसे साधन होते हैं जो आमोद, प्रमोद, विनोद भी करते हैं और मनुष्य को घटिया प्रकार की भाव-अभिव्यक्ति में लोटपोट नहीं करते।

ऐसी हँसी और विनोद की कला का विकास करने के लिए न तो कोई टॉनिक लेने की आवश्यकता है और न ही कोई अधिक चुटकुले इकट्ठे करने की ज़रूरत है बल्कि स्वयं ख़ुशी में रहने की आवश्यकता है जिससे कि सहज भाव से ही मनुष्य के ऐसे बोल निकलेंगे कि मनुष्य का मन खिलखिला उठेगा। **इसके अतिरिक्त, गीत, नाटक, कहानी भी ऐसे होने चाहिएँ जो न केवल मनोरंजन के साधन हों बल्कि मन को लुभावने तरीके से अपने लक्ष्य की ओर प्रेरित करने वाले हों।** जिसका जीवन निश्चिन्त हो, व्यर्थ सोच से फ़ारिग़ हो, उसका अपना हल्कापन उसमें स्वतः ही ऐसी कला को स्फुटित और विकसित करता है जिसे कि हम उच्च कोटि का हँसी के स्वभाव वाला मानव कह सकते हैं।

***